धर्मकथिकों में अग्र

पुण्ण मन्ताणिपुत्त

एवं

धम्मदिन्ना

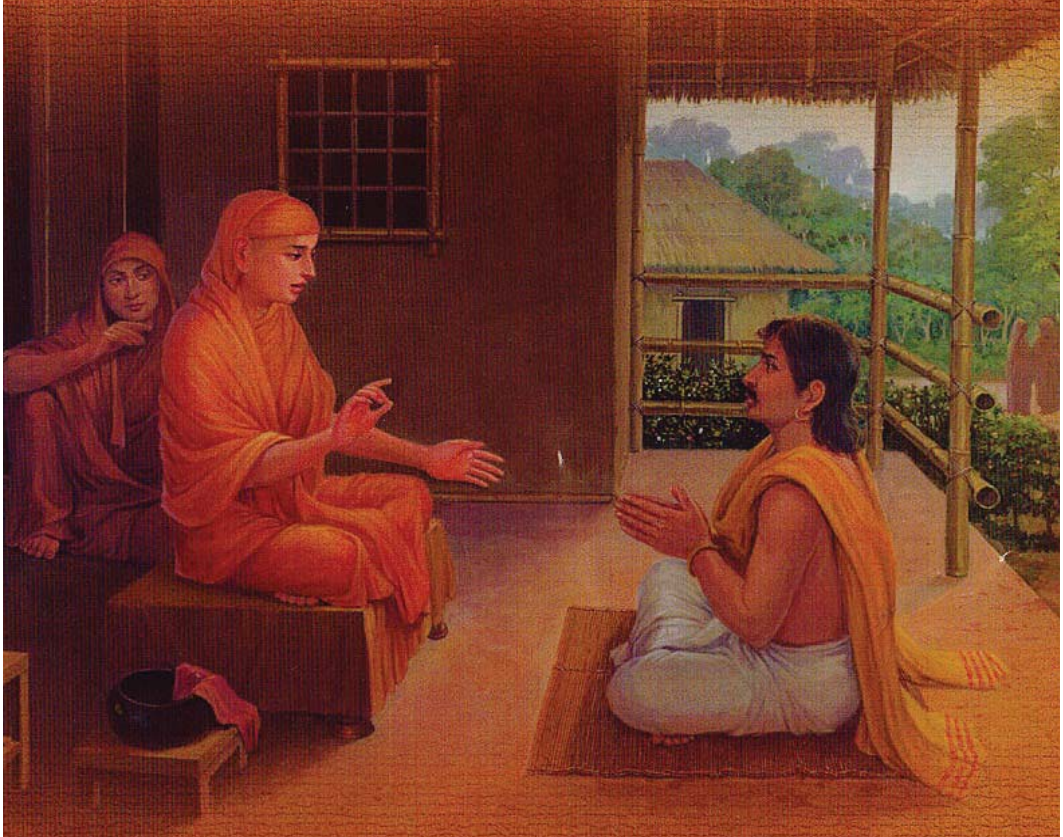

विपश्यना विशोधन विन्यास

धर्मकथिकों में अग्र

पुण्ण मन्ताणिपुत्त

एवं

धम्मदिन्ना

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

****

"एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं
धम्मकथिकानं यदिदं पुण्णो मन्ताणिपुत्तो।"
"एतदग्गं, भिक्खवे, मम साविकानं भिक्खुनीनं
धम्मकथिकानं यदिदं धम्मदिन्ना।"

–अङ्गुत्तरनिकाय (१.१.१९६, २३९)

"भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में –
धर्मकथिकों में अग्र हैं पुण्ण मन्ताणिपुत्त।"
"भिक्षुओ, मेरी भिक्षुणी-श्राविकाओं में –
धर्म-कथा कहने वालियों में अग्र हैं धम्मदिन्ना।"

****

पुण्ण मन्ताणिपुत्त एवं धम्मदिन्ना

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय [vii]

पुण्ण मन्ताणिपुत्त १

जन्म १
धर्मदूत पुण्ण १
परिनिर्वाण हेतु ब्रह्मचर्यवास ४
उपादान से अहंभाव ८
पुण्ण मन्ताणिपुत्त की पहचान १०
अतीत कथा ११

धम्मदिन्ना १४

धर्म-पथ पर पति से प्रेरित १४
धम्मदिन्ना की प्रव्रज्या १६
धम्मदिन्ना-विसाख संवाद १८
अतीत कथा २५
भगवान गौतम का शासन-काल २६

प्रकाशकीय

देवताओं और मनुष्यों के शास्ता (आचार्य) भगवान बुद्ध की शिक्षा सभी के लिए एक-समान थी। किसी प्रकार का कोई भेद-भाव नहीं। जो इस पथ पर चले उसी के लिए आशुफलदायिनी।

भगवान की चार परिषदें थीं – भिक्षु, भिक्षुणी, उपासक, उपासिकाएं। ये सभी भगवान द्वारा सिखाये गये धर्म को धारण कर युक्तियुक्त धर्म का उपदेश करने वाले सिद्ध हुए। भगवान ने इन परिषदों के अनेक जनों को उनके गुणों के अनुरूप अग्र की उपाधि प्रदान की। यथा – भिक्षु-श्रावकों में धर्मकथिकों में पुण्ण मन्ताणिपुत्त को, भिक्षुणी-श्राविकाओं में भिक्षुणी धम्मदिन्ना को।

****

सुनापरन्त का व्यापारी पुण्ण मन्ताणिपुत्त भगवान बुद्ध के संपर्क में आया, धर्म के संपर्क में आया। उसे लगा कि उसके प्रदेश के लोग कर्मकांडों में अथवा मिथ्या-मान्यताओं में और अंधविश्वासों में निमग्न रहते हैं। वे न तो शुद्ध धर्म जानते हैं और न ही उसे धारण करना। उन्हें सही शुद्ध धर्म धारण करना आ जायगा तो यथार्थ में उनका कल्याण हो जायगा। मैं उन्हें शुद्ध धर्म सिखाऊंगा।

इस निमित्त वह भगवान से आशीर्वचन प्राप्त करने के लिए उनके पास गया और कहा कि मैं अपने लोगों को धर्म सिखाना चाहता हूं। भगवान ने उसकी परीक्षा लेनी चाही। भगवान ने पुण्ण से पूछा – "पुण्ण! मेरे द्वारा धर्म सीख कर तुम किस जनपद में विहार करोगे?" आयुष्मान पुण्ण ने भगवान को उत्तर दिया – "भंते! सुनापरन्त नाम का एक जनपद है, मैं वहीं विहार करूंगा।"

भगवान ने आयुष्मान पुण्ण से कहा – "पुण्ण! सुनापरन्त के लोग बड़े चंड-रुखड़े हैं, अगर वे तुम्हें गाली देंगे, डांटेंगे, हाथ उठायेंगे, मार-पीट करेंगे, ढेलों से मारेंगे, लाठी से मारेंगे, हथियार से मारेंगे, तुम्हें जान से मार डालेंगे तो तुम्हें क्या होगा?" इस पर आयुष्मान पुण्ण ने अपनी सहिष्णुता प्रकट करते हुए कहा – "भंते! मुझे इन परिस्थितियों में यही होगा कि सुनापरन्त के लोग बड़े भद्र

हैं। यदि वहां के लोग मुझे जान से भी मार डालें तो मुझे यह होगा कि कुछ लोग इस शरीर और जीवन से ऊब कर आत्म-हत्या करने के लिए शस्त्रपात के उपायों की तलाश करते हैं, सो यह मुझे बिना तलाश किये मिल गये। भगवन! मुझे ऐसा ही होगा। सुगत! मुझे ऐसा ही होगा।"

भगवान ने आयुष्मान पुण्ण की सहिष्णुता की पराकाष्ठा को जानकर उसे सुनापरन्त नाम के जनपद में विहार करने की अनुमति दे दी।

आयुष्मान पुण्ण – अल्पेच्छ, संतुष्ट, एकांतचिंतनशील, अनासक्त, उद्योगी, शीलवान, समाधिसंपन्न, प्रज्ञासंपन्न, विमुक्तिसंपन्न, विमुक्तिज्ञानदर्शनसंपन्न इत्यादि सद्गुणों से युक्त थे तथा दूसरे भिक्षुओं को भी इन सद्गुणों को धारण करने का उपदेश देते रहते थे।

एक अवसर पर भगवान द्वारा आयुष्मान पुण्ण के इन गुणों के बखान को सुनकर समीप में बैठे आयुष्मान सारिपुत्त के मन में आयुष्मान पुण्ण के साथ कथासंलाप का भाव जागा। इस प्रयोजन हेतु वे आयुष्मान पुण्ण के पास जा पहुँचे। आयुष्मान सारिपुत्त ने आयुष्मान पुण्ण से ब्रह्मचर्यवास, उपादान-रहित परिनिर्वाण, शील-विशुद्धि इत्यादि के बारे में जानकारी चाही। आयुष्मान पुण्ण ने एक दृष्टांत द्वारा आयुष्मान सारिपुत्त की जिज्ञासाओं को शांत किया। अंत में दोनों महाश्रावकों ने एक दूसरे के सुभाषित का अभिनंदन एवं अनुमोदन किया।

आयुष्मान आनन्द ने धर्म के प्रथम चरण की शिक्षा आयुष्मान पुण्ण मन्ताणिपुत्त से प्राप्त की थी और उनके उपदेश को सुनकर ही सोतापन्न अवस्था को प्राप्त किया था।

भगवान ने अपने भिक्षुश्रावकों में आयुष्मान पुण्ण मन्ताणिपुत्त को 'धर्मकथिकों (धर्म कथा कहने वालों) में अग्र' घोषित किया।

****